ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

Symbol of oneness
DHYAN-KAKSH
SCHOOL OF EQUANIMITY & EVEN-SIGHTEDNESS

समदृष्टि

एकता का प्रतीक

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल
(Guiding force)

सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

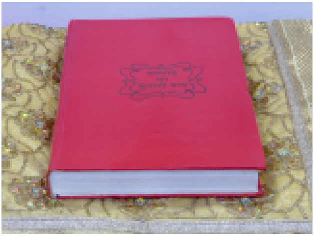

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-55-0

प्रथम संस्करण | जुलाई, 2024

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

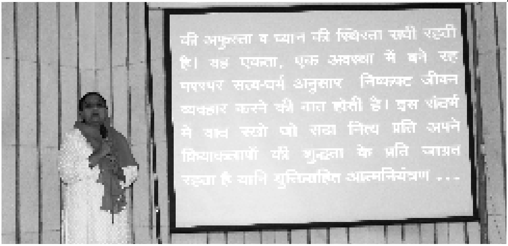
की व ध्यान की स्थिरता बनी रहती
है। वह एकता, एक अवस्था में बने रह
परस्पर सत्य-धर्म अनुसार निष्कपट जीवन
व्यवहार करने की बात होती है। इस संदर्भ
में याद रखो सदा नित्य प्रति अपने
क्रियाकलापों की शुद्धता के प्रति जाग्रत
रहना है यानि आत्मनियंत्रण ...

सच्चाई
धर्म
सम

समदृष्टि

समदर्शी की दृष्टि - समदृष्टि कहलाती है। यहाँ समदर्शी से आशय सब अवस्थाओं और पदार्थों को समान दृष्टि से देखने से है। समदृष्ट मानव हर प्रकार के कामुक, स्वार्थपर भाव से विमुक्त रह, चराचर जगत को अपने-पराए, जात-पात, ऊँच-नीच की भेद-बुद्धि से रहित होकर, एकरूपता से देख पाता है और इस तरह अपनी देखने की वृत्ति व अवलोकन शक्ति यानि दृष्टि अथवा ध्यान को कंचन/पवित्र/निर्मल अवस्था में साधे रख सदा एकाग्रचित्त व स्वस्थ बना रहता है।

यही कारण है कि उस समभावी के लिए लोक-परलोक के किसी भी तत्त्व को देखना व जानना कोई भी असाध्य कार्य नहीं रहता और उसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म व स्थूल से स्थूल, हर पदार्थ के यथार्थ को जान, सत्य की पारखी बन जाती है व

सर्गुण-निर्गुण सम कर जानती है। तभी तो ऐसा अंतर्मुखी इंसान सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार कह उठता हैः-

फिर समभाव-समदृष्टि वाले,
सर्गुण निर्गुण एक निगाह आया और
एक ही सुहाया
ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना
सर्गुण निर्गुण एक निगाह आया और
एक ही सुहाया

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-2, कीर्तन न0 22)

आशय यह है कि संसारी मनुष्य को बाह्यकरण अर्थात् चक्षु आदि पाँच ज्ञानेन्द्रियों तथा मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार रूप - अंतःकरणः चतुष्टय के द्वारा, जिस जगत में विभिन्नता (फर्क), विचित्रता और विविधता दिखाई देती है, वहीं परमार्थी मनुष्य,

उस असमन्वित अनेकता के बीच, एकत्व की अवधारणा को अपनाता है और सभी चराचर प्राणियों में, अविनाशी और समरूप से विराजमान परमेश्वर को देखते हुए, इस जगत को ब्रह्ममय जान, आत्मपद प्राप्त कर लेता है। जैसा कि कहा भी गया है:-

समभाव समदृष्टि दा जेहड़ा सजन
प्रसंग चलावेगा
आत्मपद दी प्राप्ति फिर ओ
किस तरहां न ओ पावेगा

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-1, कीर्तन न0 10)

इस तथ्य से स्पष्ट है कि इस संसार में देखते सब हैं, पर सम्यक् रूपेण देखने वाले कम ही होते हैं। अधिकांश बाहर से देखते हैं। कुछ सत्य पारखी भीतर तक देख लेते हैं। जो बाहर से देखते हैं, वे

उनमें भेद बुद्धि कर लेते हैं। पर जो निर्मल होते हैं और भीतर से निरखते हैं, उन्हें सब प्राणियों के भीतर एक चेतन का ही परिदर्शन होता है। उनकी दृष्टि में समत्व होता है। ऐसे देखने को ही समदर्शिता कहते हैं।

ऐसा व्यक्ति 'एक ही आत्मतत्व सर्वत्र व्याप्त है', इस अवधारणा को आत्मसात् कर, अनेक नाम-रूपात्मक इस जगत के प्राणियों में, किसी भी प्रकार का भेद अनुभव न करते हुए, सबको एक ही नज़र से देखता है और सहज ही आत्मीयता के भाव से विचर पाता है। इससे परिवार, समाज व राष्ट्र में अपनेपन का प्रसार होता है और मानव औरों के सुख-दुःख को अपने सम अनुभव करता है। परिणामस्वरूप सर्वत्र सुख बढ़ता है और दुःख घटता है। एकता व एक अवस्था पनपती है और अपना अपकार करने वाले वैरी-दुश्मन के प्रति भी, आंतरिक रूप से कोई द्वेष या खेद उत्पन्न नहीं

OPEN HOUSE
DISCUSSION

होता यानि सब अपने व सजन मित्र प्रतीत होते हैं। ऐसे उदार और सज्जन पुरुष का ही हृदय- व्यापक और निष्कलुष होता है व उसी की दृष्टि, परस्पर भिन्न दिखाई देते हुए, चराचर प्राणियों को, एक अव्यय (परमात्म) भाव से देखते हुए, हर हाल में सम रह पाती है। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों कहा गया हैः-

'अन्दर की वृत्ति दर्शन में और बाहर की वृत्ति एकरस राम रूप-कृष्ण रूप में सबको देखे। इन वचनों पर चलने से अन्दर की वृत्ति भी दमन हो जाएगी और बाहर की भी जीती जाएगी। यह समदृष्टि का छोटा सा रास्ता है' ।

(श्री साजन जी के पत्र सभाओं के नाम, युक्ति दूसरी, पृष्ठ संख्या-7)

समदृष्टि होने के लिए समभाव का होना अनिवार्य

इन पंक्तियों से सजनों ज्ञात होता है कि समदृष्टि होने के लिए समभाव का होना अनिवार्य है। समभाव यानि वह निर्विवाद, उत्कृष्ट भाव जिसकी पहुँच मात्र व्यक्तिगत स्तर तक नहीं अपितु कीड़ी से लेकर हाथी तक, ब्रह्मा से लेकर तृण तक है अर्थात् यह श्रेयस्कर भाव अपने आप में ईश्वर की सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता व सर्वशक्तिमानता को अभिव्यक्त करता है तथा जो भी इस निर्मल भाव को वर्त-वर्ताव द्वारा अमल में लाता है वह स्वतः ही मोहनिद्रा यानि सांसारिक वस्तुओं को सब कुछ समझने के भ्रम रूपी अज्ञान से उबर समदर्शी हो जाता है।

समदर्शी की दृष्टि सब अवस्थाओं और पदार्थों को समान दृष्टि से देखती है। ऐसा इसलिए क्योंकि समभाव अपनाने से अपने-पराए, तेरे-मेरे, प्रिय-अप्रिय, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, मान-अपमान जैसे स्वार्थपर, संकीर्ण, नकारात्मक विषम भावों

का अंत होता है और आत्मा में समत्व वृत्ति गहन रूप ले लेती है। इस तरह लघुत्व-बोध के मिटने पर समता का ऊद्ध्र्व विकास होता है और सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म, क्षमा, त्याग, निष्काम जैसे विवेकयुक्त परोपकारी सकारात्मक सद्-भावों को पनपने का अवसर प्राप्त होता है। ऐसा होते ही सारी वसुधा अपने ही सम जान पड़ती है और हृदय का विस्तार होता है। हृदय विस्तार से यानि अपने सम ही सबको चैतन्य मानने व समझने से दृष्टि में समदर्शिता आती है और इष्ट-अनिष्ट, सुख-दुःख, मिट्टी-सोना, सब चराचर जीव समान दिखने लगते हैं। आशय यह है कि हृदय में एकात्मता के भाव का इस तरह विस्तार होने से दृष्टा-दृश्य, भक्त-भगवान सब एकमेव प्रतीत होते हैं और मानव परमात्मा के सदृश महान बन कह उठता हैः-

चन चढ़या सूरज होया जे उदय,
सजनों चन चढ़या
चन चढ़या कुल आलम देखे,
समभाव दी होसवे फ़तह, सजनों चन चढ़या

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-2, कीर्तन न0 37)

यह सत्त्वचित्त की उपलब्ध विभूति यानि आलौकिक शक्ति है जिसके अंतर्गत भेद और दुराव मिट जाता है और समझ आ जाता है कि एक ही परमतत्त्व विभागरहित यानि एकरूप होकर, विभिन्न नाम-रूपों में विभक्त हुआ सा, स्थित है। परन्तु उसकी इस एकता में अनेकता और अनेकता में एकता के रहस्य को समझने हेतु, स्वार्थ की संकीर्ण परिधि से ऊपर उठकर, उदार और व्यापक परमार्थ दृष्टि से यानि समभाव अनुरूप नज़रिया अपनाकर, इस जगत को समदर्शिता से देखने की व परस्पर सज्जनतापूर्ण व्यवहार करने की आवश्यकता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों कहा गया हैः-

समभाव समदृष्टि दे प्रतिकूल न चलियो,
समभाव नज़रों में कर सजन वृत्ति फड़ियो।
सजन भाव नज़रों में कर के सजनों,
सजन भाव प्रकृति में लियाईये

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-1, कीर्तन न0 16)

निष्कर्ष

इस बात को समझते हुए आप भी सजनों इस परिवर्तनशील सत्ता के पीछे विद्यमान, अपरिवर्तनशील चिरंतन सत्ता की धारणा को, अपना यथार्थ मानते हुए, उस सत्य के आलोक में विकसित विचारधारा अनुरूप, अपना समभाव से विकास करो और अपनी आत्मा/परमात्मा की शाश्वत अजर-अमर व अटल अवस्था को स्वीकार, तद्नुकूल अपनी मनोवृत्ति, दृष्टिकोण और स्वभाव

ढाल लो। जानो तभी इस क्षणभंगुर संसार की निस्सारता को जान, समय अनुसार स्वयं में आपेक्षित स्वाभाविक परिवर्तन लाने में कामयाब हो पाओगे और इस प्रकार सत्य के व्यवहारिक व क्रियाशील वाहक बन, उस ईश्वर की सर्वोत्कृष्ठ कृति होने का सत्य जग जाहिर कर, समबुद्धि नाम कहाओगे।

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities
Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm
at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निमलिखित लिंक (QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं ।

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695

Email: contact@dhyankaksh.org

Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2